तीन बलवान औरतें

जापान की एक लोककथा

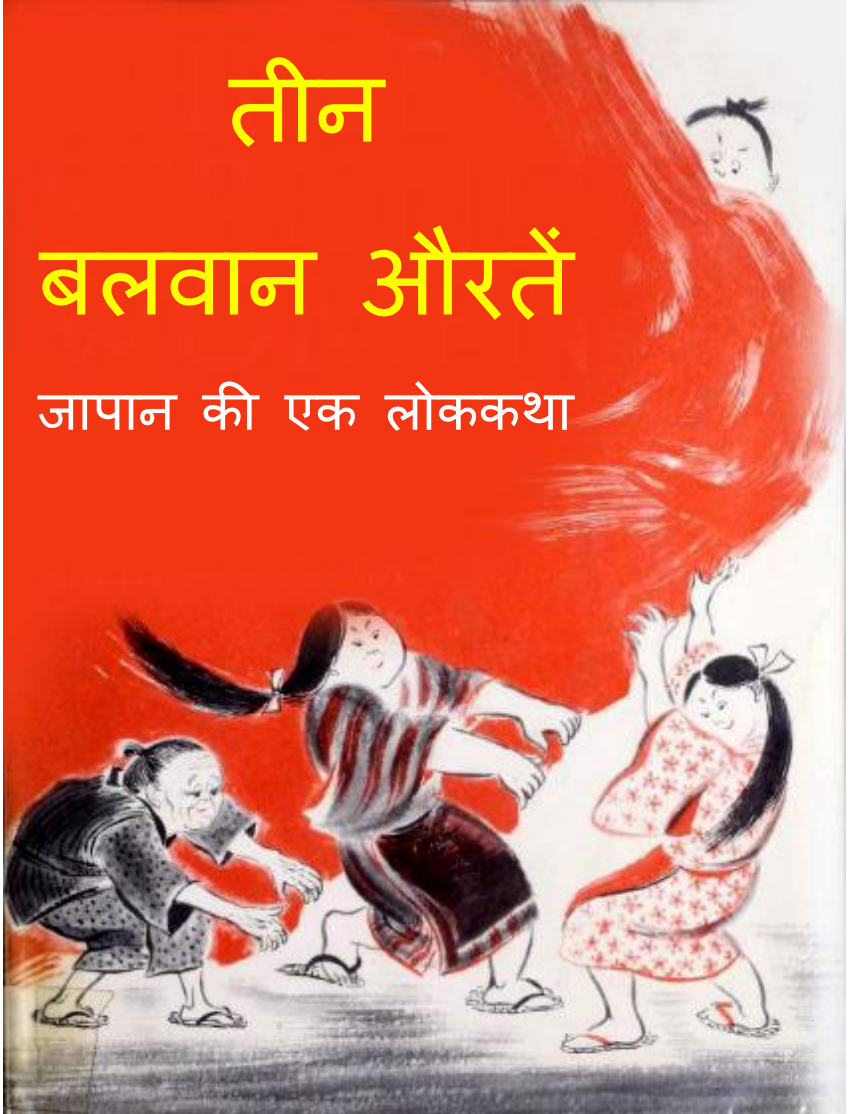

तीन
बलवान औरतें

जापान की एक लोककथा

तीन बलवान औरतें

जापान की एक लोककथा

सैंकड़ों वर्ष पहले जापान में एक प्रसिद्ध पहलवान रहता था. एक बार सम्राट के सामने कुश्ती लड़ने के लिये, वह राजधानी की ओर जा रहा था.

छोटे पेड़ों के तनों जैसी मोटी टाँगों के सहारे, लंबे डग भरता हुआ वह चल रहा था. वह सात घंटों से चल रहा था और शायद बिना थके हुए वह सात घंटे और भी चल सकता था.

शरद ऋतु का समय था, आकाश सागर समान ठंडा नीला था और हवा सर्द थी. चमकते हुए छोटे से सूर्य के प्रकाश में, रास्ते के अगल-बगल लगे पेड़ लाल और संतरी रंग के प्रतीत होते थे.

पहलवान धीमे-धीमे "ज़ुन-ज़ुन-ज़ुन" गुनगुना रहा था. वह उसी लय में गुनगुना रहा था जिस लय में उसकी टाँगे चल रही थीं. उसके पतले, भूरे रंग के कपड़े हवा में फड़फड़ा रहे थे. उसने कोई तलवार न ले रखी थी. उसे अभिमान था कि किसी सुनसान या अँधेरी जगह में भी उसे तलवार रखने की कोई आवश्यकता न होती थी. बर्फीली ठंडी हवा उसे याद दिला रही थी कि उस जैसे लंबे-चौड़े व्यक्ति के लिए महँगे गर्म कपड़े सिलना किसी दर्ज़ी के बस की बात नहीं थी. एक प्रसिद्ध पहलवान की भांति वह तंदुरुस्त, ताकतवर और थोड़ा घमंडी था.

पेड़ों के पीछे से आती तेज़ धारा की कलकल आवाज़ उस बता रही थी कि वह किसी नदी किनारे चल रहा था. वह ज़ोर से "ज़ुन-ज़ुन" गुनगुनाने लगा; उसे अपनी आवाज़ अच्छी लगती थी और वह चाहता था कि उसकी आवाज़ बहते पानी की आवाज़ से ऊंची हो.

उसने सोचा: लोग मुझे 'सदैव-पर्वत' के नाम से बुलाते हैं क्योंकि मैं बहुत शक्तिशाली पहलवान हूँ-खूब बड़ा भी हूँ. मैं बहुत बहादुर हूँ, लेकिन इतना विनीत कि कभी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करता....

तभी उसने एक लड़की देखी जो अवश्य ही नदी की ओर से आई थी क्योंकि अपने सिर पर वह एक बाल्टी सँभाले हुए थी.

बाल्टी पकड़े हुए उसके हाथ छोटे थे और हर अंगूठे के जोड़ के नीचे एक गड्ढा था. वह एक गोल-मटोल, छोटी-सी लड़की थी, जिसके गाल लाल थे और नाक बटन समान थी. उसकी आँखों से लगता था कि वह एक ही पल में दस हज़ार मज़ेदार कहानियों के बारे में सोच रही थी. बड़ा परिश्रम करके वह सड़क पर चढ़ आई और पहलवान के आगे-आगे फुदकती हुई, मस्ती में चलने लगी.

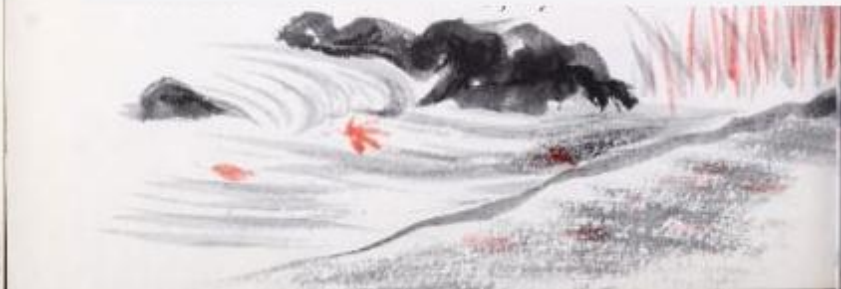

“अगर मैंने इस मोटी लड़की को गुदगुदी न की तो जीवन भर इस बात का खेद रहेगा,” पहलवान ने धीमे से कहा. “वह अवश्य चीं-चीं करेगी और मुझे खूब हंसी आयेगी. अगर उसने अपनी बाल्टी गिरा दी तो बड़ा मज़ा आयेगा - और मैं दौड़ कर बाल्टी को नदी से भर लाऊँगा और उसके घर तक भी ले जाऊँगा.”

वह दबे पाँव आगे आया और अपनी एक विशाल उँगली से उसकी पसलियों को हौले से छुआ.

“कुचुकुचुकुचु!” उसने कहा, जो जापानी में चंचल आवाज़ है.

लड़की ज़ोर से हंसी, चिल्लाई और फिर अपनी बाहँ उसने नीचे कर ली, पहलवान का हाथ उसके शरीर और बाजू के बीच में आ गया.

“हो-हो-हो! तुम ने मुझे पकड़ लिया! अब मैं हिल भी नहीं सकता!” पहलवान ने हँसते हुए कहा.

उसे लगा की लड़की अच्छे स्वभाव की थी और उसे उसका मज़ाक करना अच्छा लगा था. फिर उसने अपना हाथ खींच कर छुड़ाना चाहा.

लेकिन वह हाथ छुड़ा न पाया.

उसने दुबारा प्रयास किया और इस बार थोड़ी अधिक ताकत लगाई.

“अरे, अब मुझे जाने दो, छोटी लड़की,” उसने कहा.

“मैं बहुत शक्तिशाली हूँ. अगर मैंने ज़्यादा ज़ोर से हाथ खींचा तो तुम्हें चोट लग जायेगी.”

“तो खींचो,” लड़की बोली, “शक्तिशाली लोगों का मैं सम्मान करती हूँ.”

वह चलने लगी. हालाँकि पहलवान ने इतनी ताकत लगा कर अपना हाथ खींचा कि उसकी एड़ियों के रगड़ने से ज़मीन में गहरी नालियाँ-सी बन गईं, लेकिन वह हाथ छुड़ा न पाया और लड़की के पीछे चलता रहा. अगर वह एक नन्हा पिल्ला होता तो भी शायद लड़की उसका इतना कम सम्मान नहीं करती.

दस मिनट बाद भी लाचार सा, उसके पीछे चलते-चलते वह हाथ को खींचता रहा. उसे बस इस बात की संतोष था कि रास्ता सुनसान था और कोई उसे उस हालत में देख न रहा था.

“कृपया मुझे जाने दो,” उसने विनती की. “मैं प्रसिद्ध पहलवान सदैव-पर्वत हूँ. मुझे सम्राट के समक्ष कुश्ती लड़नी है”-- लज्जा और उलझन के कारण उसके आंसू निकल आये—“और तुम मेरे हाथ को चोट पहुंचा रही हो.”

लड़की ने अपने सिर पर रखी बाल्टी को अपने खाली हाथ से संतुलित किया. “अरे बेचारा, प्यारा-सा सदैव-पर्वत,” उसने कहा. “क्या तुम थक गये हो? क्या मैं तुम्हें उठा कर ले चलूं? मैं पानी यहीं छोड़ जाऊँगी और बाद में आकर ले जाऊँगी.”

“मुझे उठा कर ले जाने की आवश्यकता नहीं है. बस मेरा हाथ छोड़ दो, फिर मैं भूल जाऊँगा कि मैं कभी तुम से मिला था. तुम मुझ से क्या चाहती हो?” पहलवान ने विलाप करते हुए कहा.

“मैं सिर्फ तुम्हारी मदद करना चाहती हूँ,” लड़की बोली. अब वह उसे एक तंग पहाड़ी रास्ते से खींच कर ऊपर ले जा रही थी. “ओह, मैं जानती हूँ कि जब तुम्हारा सामना दूसरे पहलवानों से होगा तो किसी अन्य पहलवान की भांति तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी. तुम जीत जाओगे या हार जाओगे, पर किसी भी स्थिति में तुम बुरी तरह घायल न होगे. लेकिन क्या तुम्हें इस बात का भय नहीं कि किसी दिन तुम्हारा मुकाबला एक बहुत ही शक्तिशाली आदमी से हो सकता है?”

सदैव-पर्वत का रंग उड़ गया. वह लड़खड़ा गया. वह कल्पना कर रहा था कि जापान में सब उस पर हंस रहे थे, “कैसा-सदैव-पर्वत”

“देखा? तुम कितनी जल्दी थक गये हो,” लड़की ने कहा. “मैं और धीरे चलूंगी. तुम मेरी माँ के घर क्यों नहीं आ जाते? हम तुम्हें शक्तिशाली बना देंगे! कुश्ती के मुकाबले तो राजधानी में तीन माह बाद ही शुरू होंगे. मैं जानती हूँ, क्योंकि मेरी नानी ने भी भाग लेने का सोचा था. वहाँ यह समय तुम बुरे लोगों की संगत में बिता दोगे और जो थोड़ी सी ताकत तुम में है उसे भी व्यर्थ गँवा दोगे.”

“ठीक है. तीन माह. मैं साथ चलूँगा.” पहलवान ने कहा. उसे लग रहा था की उसके पास गँवाने को अब कुछ और न था. उसे भय भी था कि अगर उसने इंकार कर दिया तो लड़की गुस्सा हो जायेगी और उसे किसी पेड़ के ऊपर डाल देगी, जब तक कि वह अपना विचार नहीं बदलता.

“उत्तम,” उसने प्रसन्नता से कहा. “हम पहुंच ही चुके हैं.”

उसने उसका हाथ छोड़ दिया. हाथ लाल हो गया था और थोड़ा सूज गया था. “लेकिन अगर तुमने अपना वचन तोड़ा और भाग गये तो मैं तुम्हारा पीछा कर तुम्हें पकड़ का वापस ले आऊंगी.”

शीघ्र ही वह एक छोटी-सी घाटी में पहुंचे. वहाँ एक छोटा-सा घर था जिसकी छत फूस की बनी थी.

“नानी घर में ही है लेकिन वह बूढ़ी है और शायद सो रही होगी.” लड़की ने अपने हाथ से अपनी आँखों पर छाया बना कर कहा, “लेकिन माँ खेत से गाय को वापस ला रही होगी—ओह, माँ वहाँ पर हैं!”

उसने हाथ हिलाया. औरत ने एक गाय को उठा रखा था. गाय को ज़मीन पर खड़ा कर, उसने भी वापस हाथ हिलाया.

वह मुस्कराई और घास पर, अपनी बेटी समान ही फुदकते हुए उनकी ओर आई. अरे, इसकी चाल तो और भी अधिक मज़बूत है, पहलवान ने सोचा.

“क्षमा करना,” माँ ने अपने कपड़ों से गाय के बाल झाड़ते हुए कहा. “यह पहाड़ी रास्ते तो बस पत्थरों से भरे हुए हैं. इनसे मेरी गाय के पाँव में चोट लग जाती है. और यह भला युवक कौन है जिसे तुम साथ लाई हो, मारू-मे.”

लड़की ने सारी बात बताई. “और हमारे पास सिर्फ तीन माह हैं!” उसने बड़ी व्यग्रता से कहा.

“ठीक है, कुछ करने के लिये तीन माह लँबा समय नहीं है, लेकिन इतना कम भी नहीं है कि कुछ किया न जा सके.” माँ ने कुछ सोचते हुए कहा. “लेकिन यह बहुत ही निर्बल दिखाई पड़ता है. इसे बहुत सारी अच्छी चीज़ें खानी पड़ेंगी. जब यह थोड़ा शक्तिशाली हो जाएगा तो शायद आसान काम करने में नानी की सहायता कर पाए.

“यही उचित होगा!” लड़की बोली और फिर उसने नानी को पुकारा—ज़ोर से क्योंकि नानी थोड़ा ऊँचा सुनती थी.

“मैं आ रही हूँ!” घर के अंदर से एक कर्कश आवाज़ आई और एक ठिगनी बूढ़ी औरत लाठी पकड़े, डगमगाती हुई बाहर आई. जैसे ही वह उनकी ओर आई वह एक बड़े ओक के पेड़ की जड़ों से टकरा गई.

“हे! मेरी आँखें अब वैसी नहीं हैं जैसी पहले थीं. इस माह में चौथी बार इस पेड़ से टकराई हूँ.” उसने शिकायत की और अपने पतले बाजू पेड़ के तने पर लपेट कर उसे ज़मीन से उखाड़ कर बाहर खींच लिया.

“ओह, नानी! आपने मुझे यह पेड़ उखाड़ने देना था,” मारू-मे ने कहा.

“हम्म. मैंने अपनी बेचारी बूढ़ी पीठ को कहीं घायल न कर दिया हो,” बूढ़ी औरत ने बड़बड़ा कर कहा. फिर उसने ज़ोर से कहा, “बेटी! इस पेड़ को दूर फेंक दो, किसी को ठोकर न लग जाए. लेकिन ध्यान रखना किसी के ऊपर न गिरा देना.”

“पेड़ हटाने में तुम माँ की सहायता करो,” मारू-मे ने सदैव-पर्वत से कहा. “पर फिर सोचती हूँ कि तुम रहने दो, बस देखो.”

माँ पेड़ के पास गयी. उसे दोनों हाथों से पकड़ कर उठा लिया. फिर-थोड़ा हाँफते हुए, बेढंगे तरीके से, जैसे औरतें फेंकती हैं - उसे दूर फेंक दिया. पेड़ ऊपर हवा में तैरता हुआ दूर चला. जैसे-जैसे वह दूर जाता गया वह छोटा होता गया. एक हल्के धमाके के साथ पेड़ पर्वत की ढलान पर जा दूर गिरा.

“अह, कितना बेढंगा,” वह बोली. “मैंने तो उसे पर्वत के दूसरी ओर फेंकना चाहा था. अब वह शायद रास्ते में बाधा पैदा कर देगा. मुझे कल सुबह जल्दी उठ कर उसे रास्ते से हटाना होगा.”

पहलवान तो सुन ही न रहा था. वह तो बेहोश हो गया था.

“ओह! हमें इसे बिस्तर में लेटा देना चाहिये,” मारू-मे बोली.

“बेचारा, दुर्बल युवक,” माँ बोली.

“मेरी इच्छा है कि हम इसकी कुछ सहायता करें. चलो, मैं इसे उठा कर ले चलती हूँ, यह तो बहुत हल्का है,” नानी बोली. उसने युवक को अपने कंधे पर उठा लिया और लाठी को पकड़े, चरमराते हुए घर के अंदर आ गयी.

अगले दिन से तीनों सदैव-पर्वत को उतना शक्तिशाली आदमी बनाने में जुट गयीं जितना शक्तिशाली उनके विचार में उसे होना चाहिए था. उसे वह सादा लेकिन सख्त भोजन खाने को देतीं. हर दिन चावल को पकाने के लिये पानी की मात्रा कम करती गयीं. एक दिन चावल इतने सख्त हो गये कि कोई साधारण आदमी न उन्हें चबा सकता था, न पचा सकता था.

हर दिन उसे पाँच लोगों का काम करना पड़ता और हर शाम उसे नानी से कुश्ती लड़नी पड़ती. मारू-मे और उसकी माँ का विचार था कि नानी सबसे बूढ़ी और कमज़ोर थी. इसलिये दुर्घटना-वश भी नानी उसे घायल नहीं कर सकती थी. उन्हें यह भी लगता था कि यह कसरत नानी को गठिया से कुछ राहत देगी.

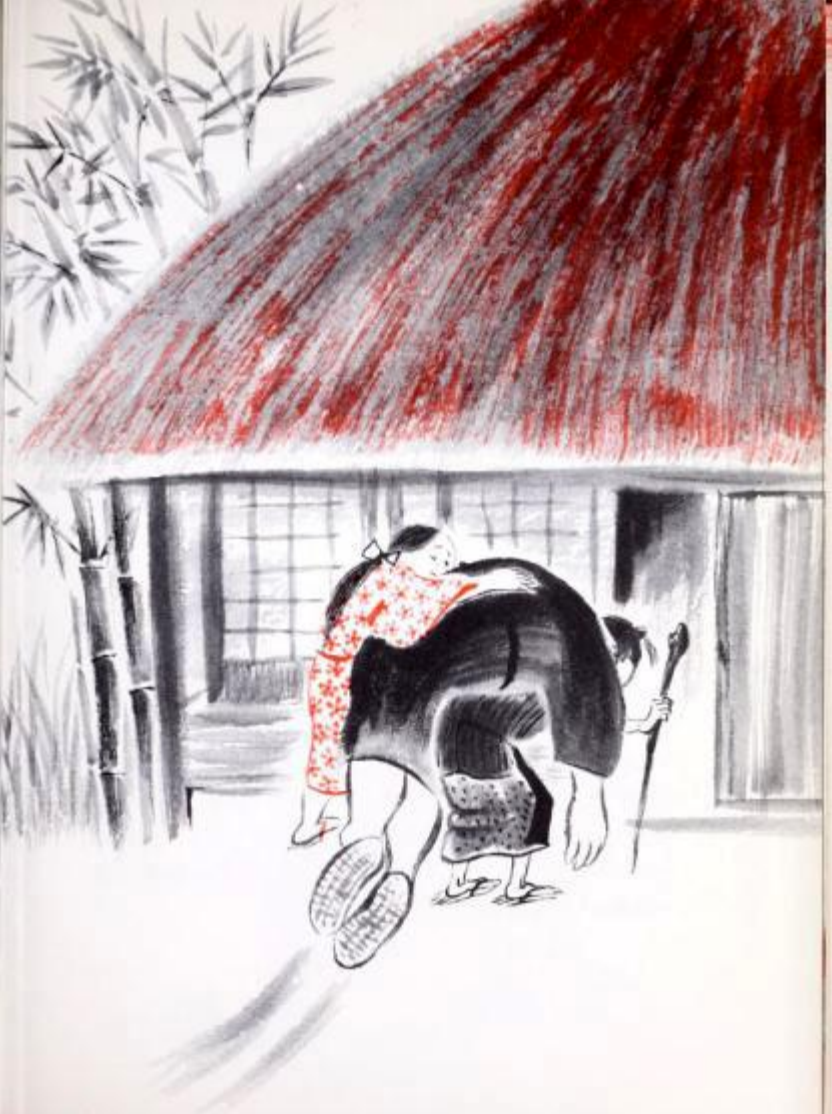

उसे आभास नहीं हुआ पर उसकी ताकत दिन पर दिन बढ़ रही थी. नानी अभी भी, अपनी प्यारी मुस्कराहट बदले बिना, उसे हवा में उछाल देती थी और फिर सरलता से पकड़ लेती थी.

वह भूल ही गया कि इस घाटी के बाहर वह जापान का एक महान पहलवान था और लोग उसे सदैव-पर्वत बुलाते था. उसकी टाँगे लट्ठों समान थीं, अब वह खम्भों समान हो गईं थीं. उसके बड़े-बड़े हाथ पत्थरों की तरह सख्त हो गये था. जब वह उंगलियों की गाँठों को चटकता था तो जो आवाज़ निकलती थी वह ठंडी रात में किसी पेड़ के टूटने की आवाज़ जैसी होती थी.

कभी-कभी वह जापान के पहलवानों की तरह एक कसरत करता था-एक पाँव हवा में उठा कर ज़मीन पर पटकता था, फिर दूसरा पाँव पटकता था. तब आसपास के गाँव के लोग आकाश की ओर देखते थे और कहते थी कि आकाश में असमय बादल गरज रहे थे.

शीघ्र ही नानी की तरह वह भी पेड़ उखाड़ सकता था. वह पेड़ को फेंक भी सकता था-पर अधिक दूर नहीं. तीसरे माह के अंत में, एक शाम उसने नानी को कुश्ती में आधे मिनट तक नीचे ज़मीन पर दबोचें रखा.

“हे-हे!” वह जोर से हंसी और उठ बैठी. उसके चेहरे की हर झुर्री मुस्करा रही थी, “मैंने कभी विश्वास न किया होता!”

मारू-मे खुशी से उछल पड़ी और उसे अपनी बाँहों में भर लिया-परन्तु हौले से. उसे डर था की कहीं उसकी पसलियाँ न टूट जाएँ.

“बहुत खूब, बहुत खूब! तुम कितने शक्तिशाली हो,” माँ बोली. हर दिन की तरह, अपनी गाय उठाये हुए, वह उसी समय खेत से घर लौटी थी. उसने गाय को नीचे खड़ा कर दिया और पहलवान की पीठ थपथपाई.

वह तीनों मान गईं कि अब वह सम्राट के सामने सच्ची शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये तैयार था.

“कल जब तुम जाओगे तो यह गाय साथ ले जाना,” माँ ने कहा. “इसे बेच कर अपने लिए एक पेटी खरीदना- रेशम की पेटी. सबसे बड़ी और चौड़ी पेटी लेना और सम्राट के सामने उपस्थित होते समय उसे हमारी निशानी के रूप में पहनना.”

“आपकी इकलौती गाय को ले जानी की बात मैं सोच भी नहीं सकता. आपने पहले ही मुझे पर बहुत उपकार किये हैं. और खेतों को जोतने के लिये आपको उसकी आवश्यकता भी है, क्यों है न?”

वह तीनों ज़ोर से हंस दीं. मारू-मे ने किलकारी मारी, उसकी माँ चिल्लाई. नानी तो इतने ज़ोर से घें-घें करने लगी कि उसका दम घुटने लगा और उसकी पीठ ज़ोर से थपथपानी पड़ी.

“हे भगवान,” माँ हँसते हुए बोली. “तुम यह तो नहीं समझे बैठे थे कि हम अपनी गाय से ऐसा काम लेते हैं! अरे, नानी अकेले ही पाँच गायों से भी अधिक ताकतवर हैं!”

“यह गाय तो हमारी पालतू है,” मारू-मे ने दाँत दिखाते हुए कहा. “उसकी भूरी आँखें बहुत ही प्यारी हैं.”

“लेकिन उसे हर दिन उठा कर खेत ले जाना और वापस लाना ताकि वह पर्याप्त घास खा सके, बड़ा उबाऊ काम है,” माँ ने कहा.

“फिर आप मुझे अनुमति दें कि सम्राट से पुरस्कार में जो भी धनराशि मुझे मिलेगी वह मैं आपको दे दूँ,” सदैव-पर्वत ने कहा.

“ओह, नहीं! ऐसी बात तो हमारे मन में आ भी नहीं सकती!” मारू-मे बोली. “हम तुम्हें इतना चाहते हैं कि तुम्हें कुछ भी नहीं बेच सकते. और अजनबियों से उपहार लेना उचित नहीं होता.”

“सत्य है,” सदैव-पर्वत ने कहा. “तुम से विवाह करने के लिए अब मैं तुम्हारी नानी और माँ से अनुमति मांगुगा. मैं भी इस परिवार का भाग बनना चाहता हूँ.”

“ओह! मैं विवाह का जोड़ा तैयार रखूँगी!” मारू-मे बोली.

नानी और माँ ने इस बात पर गंभीरता से विचार करने का नाटक किया, लेकिन शीघ्र ही मान गईं.

अगली सुबह सदैव-पर्वत ने जापानी पहलवानों की तरह अपने बालों को सिर के ऊपर एक गाँठ में बाँध लिया और चलने के लिए तैयार हो गया. उसने मारू-मे और उसकी माँ को धन्यवाद कहा और नीचे झुक कर नानी का अभिवादन किया क्योंकि वह सबसे वृद्ध थी और कुश्ती में उसकी बढ़िया साथी थी.

फिर उसने गाय को अपने बाजुओं में उठा लिया और पहाड़ के ऊपर चढ़ने लगा. जब वह चोटी पर पहुँचा तो उसने गाय को अपने कंधे पार उठा लिया और हाथ हिला कर मारू-मे को अलविदा किया.

जिस नगर में वह सबसे पहले पहुँचा, वहां सदैव-पर्वत ने गाय को बेच दिया. उसे अच्छे पैसे मिले क्योंकि गाय खूब मोटी-ताज़ी थी; उसने खेत में कभी काम जो न किया था. उन पैसों से उसने सबसे बड़ी रेशम की पेटी खरीदी.

जब वह राजमहल पहुँचा तो उसने पाया की कई पहलवान पहले ही उपस्थित थे. वह सब मैदान में बैठे बड़े-बड़े कटोरों में चावल खा रहे थे, और अपने बारे में डींगें मार रहे थे. उन्होंने सदैव-पर्वत की ओर अधिक ध्यान न दिया, बस यह सोच रहे थे कि वह इतनी देर से क्यों आया था. कुछ पहलवानों को लगा की वह बहुत शांत स्वभाव का हो गया था और कोई डींग न मार रहा था.

राज दरबार की सभी महिलायें और पुरुष महल के एक विशेष मंडप में कुश्ती के मुकाबले देखने के लिये बैठे थे. उन्होंने एक के ऊपर एक, सोने की कड़ाई से भरे हुए, कई लबादे पहन रखे थे. उनके चेहरों पर उभरती पसीने की बूँदें दुपहर की ठंड में जम जाती थीं. राज-पुरुषों ने बड़ी-बड़ी तलवारें ले रखी थीं, जिन पर सोना और बहुमूल्य पत्थर जड़े हुए थे. इस कारण तलवारें इतनी भारी थीं कि अगर वह उनका उपयोग करना जानते तब भी न कर पाते. राज-महिलाओं के काले लंबे बाल नीचे फैले हुए थे. उन्होंने अपने चेहरों पर इतना सफेद रंग लेप रखा था की वह सब डरावनी दिख रही थीं.

उन्होंने अपनी असली भौहें उखड़वा कर उनकी जगह पर रंगों से ऐसी भौहें बना रखी थीं जिन्हें देखकर लगता था कि वह आश्चर्यचकित-सी किसी चीज़ को देख रही थीं.

एक पर्दे के पीछे सम्राट अकेले बैठे थे. वह इतने महान थे की आम लोग उन्हें देख भी नहीं सकते थे. वह एक थके-माँदे, पर दयालु वृद्ध थे. वह चाहते थे कि कुश्ती के मुकाबले शीघ्र समाप्त हो जाएँ ताकि वह अपने कक्ष में लौट कर, कवितायें लिख सकें.

जिन दो पहलवानों को पहली लड़ाई लड़ने के लिये चुना गया उनमें एक था सदैव-पर्वत, दूसरा वह पहलवान था जिसका पेट पूरे देश में सबसे बड़ा था. उसने और सदैव-पर्वत ने बाड़े में थोड़ा-सा नमक छिड़का. ऐसा मान्यता थी कि इस तरह बुरी आत्मायें दूर भाग जाती थीं.

फिर दूसरे पहलवान ने अपने पेट को एक ओर करते हुए अपना पाँव उठाया और उसे ज़मीन पर पटका. ज़ोर का धमाका हुआ. उसने गुस्से से सदैव-पर्वत को घूर कर देखा, जैसे उसे चुनौती दे रहा हो कि, “बेचारे भयभीत आदमी, अब तुम पैर पटक कर दिखाओ!”

सदैव-पर्वत ने अपना पाँव उठाया. उसने उसे ज़मीन पर मारा.

एक भयंकर आवाज़ आई, जैसे बिजली कड़की हो. दूसरा पहलवान, साबुन के बुलबुले जैसा, उड़ कर बाड़े से बाहर जा गिरा.

वह चुपचाप उठा और सम्राट के पर्दे के सामने झुका.

“पृथ्वी के देवता क्रोध में हैं. शायद नमक में कुछ गड़बड़ है,” उसने कहा. “इस कारण इस वर्ष मैं मुकाबले में भाग नहीं लूंगा.” इतना कह कर वह चला गया, जाते-जाते वह चोरी-चोरी सदैव-पर्वत को संदेह भरी दृष्टि से देख रहा था.

उसी पल पाँच और पहलवानों ने निर्णय ले लिया कि वह भी मुकाबले में भाग न लेंगे. वह सब सदैव-पर्वत से नाराज़ लग रहे थे.

उसके बाद सदैव-पर्वत ने अपना पाँव धीमे से ही ज़मीन पर पटका. जो भी पहलवान लड़ने आता, सदैव-पर्वत उसे धीरे से उठा कर सम्राट के पर्दे के सामने डाल देता और झुक कर सम्राट का अभिवादन करता.

राज-महिलाओं की भौहें और ऊपर हो गईं. राज-पुरुष व्याकुल और भयभीत दिखाई दे रहे थे. वह तो उग्र, ताकतवर पहलवानों को एक-दूसरे को पटकते हुए और खींचते हुए देखना चाहते थे. लेकिन सदैव-पर्वत तो सरलता से जीतता जा रहा था. सिर्फ पर्दे के पीछे बैठे सम्राट प्रसन्न थे क्योंकि मुकाबले शीघ्र समाप्त होने वाले थे और कवितायें लिखने के लिये उन्हें अधिक समय मिलने वाला था.

उन्होंने आदेश दिया कि पुरस्कार की सारी राशि सदैव-पर्वत को दे दी जाए.

“लेकिन,” उन्होंने कहा, “अच्छा होगा की तुम और पहलवानी नहीं करो.” उन्होंने पर्दे से एक उँगली बाहर निकाल कर उन पहलवानों की ओर संकेत किया जो ज़मीन पर बैठे मोटे-छोटे बच्चों समान निराशा में रो रहे थे.

सदैव-पर्वत ने वचन दिया कि वह कभी कुश्ती नहीं लड़ेगा. सब ने राहत की सांस ली. नीचे बैठे हुए कुछ पहलवान तो थोड़ा मुस्करा दिए.

"मैं सोचता हूँ कि मैं किसानी करूंगा," सदैव-पर्वत ने कहा और मारू-मे के पास वापस जाने के लिये वहां से तुरंत चल दिया.

मारू-मे उसकी प्रतीक्षा कर रही थी. जब उसने पहलवान को आते देखा तो भाग कर उसके पास आई. पुरस्कार की राशि से भरे उसके भारी थैलों सहित मारू-मे ने उसे उठा लिया. पर्वत के आधे रास्ते तक उसे उठा कर वह लाई. फिर हँसते हुए उसने उसे खड़ा कर दिया. बाकी रास्ते उसने सदैव-पर्वत को उसे उठाने दिया.

सदैव-पर्वत ने सम्राट को दिया अपना वचन निभाया और कभी कुश्ती न लड़ी. राजधानी में शीघ्र ही सब उसको भुला बैठे. लेकिन ऊपर पर्वतों में कभी-कभी जब धरती हिलती है, और गरजने की आवाज़ आती है, तो लोग कहते हैं कि सदैव-पर्वत और मारू-मे की नानी छिपी हुई घाटी में कुश्ती लड़ रहे हैं.

समाप्त